[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3234

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

महाविद्यालय के छात्रा/छात्राओं में पर्यावरण संबंधी ज्ञान का स्तर

मालिनी जॉनसन[1],अमृता खत्री[2]
[1]शा. महाविद्यालय कन्नौद, जिला देवास (म.प्र.)
[2]माता जीजाबाई क. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

प्रस्तावना

पर्यावरण शब्द की उत्पत्ति परि. आवरण शब्द से हुई है। सृष्टि को सभी ओर से घेरने वाला, स्वच्छ आवरण है। शुद्ध पर्यावरण के बिना जीवन असंभव है। पर्यावरण प्रकृति प्रदत्त हवा, पानी जमीन आदि से मिलकर बना है। पर्यावरण को संतुलित बनाये रखना आवश्यक है। संतुलन बिगड़ने से जीवन खतरे में पड़ सकता है। औद्योगिक विकास तथा भौतिक सुख–सुविधा के लिए लगातार पर्यावरण का ह्रास होता जा रहा है।
लगातार जंगलों की कटाई होने से वर्षा के स्त्रोत के का नष्ट होना, वन्य जीव के जीवन नष्ट करना ही पर्यावरण को असंतुलित बना रहा है। पर्यावरण के महत्वपूर्ण अंग के रुप में वनों की भूमिका विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य छात्र/छात्राओं में पर्यावरण संबंधी जागरुकता का स्तर ज्ञात करना।

परिकल्पना

छात्र/छात्राओं के पर्यावरण संबंधी ज्ञान का अभाव होना।

कार्यविधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु 100 कन्नौद कॉलेज की छात्र/छात्राओं का चयन किया गया।

निदर्शन विधि

अध्ययन हेतु निदर्शन उद्देश्यपूर्ण हेतु निदर्शन चयन विधि का प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन क्षेत्र के रुप में कन्नौद महाविद्यालयों का चुनाव किया गया। शोध में महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को ही लिया गया है।

तथ्य संकलन

तथ्य संकलन हेतु शोधकर्ता ने कन्नौद कॉलेज में जाकर किया।

उपकरण

शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली परीक्षण तैयार कर तथ्य संकलन हेतु उपयोग में लाई गई।

निष्कर्ष

प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण में पाया गया कि छात्र और छात्राओं में पर्यावरण संबंधी ज्ञान का स्तर अलग–अलग पाया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में कन्नौद कॉलेज के 100 छात्र और छात्राओं के पर्यावरण संबंधी ज्ञान का अध्ययन किया गया। छात्राओं में 40ः वृक्षों एवं वातावरण संबंधी जानकारी का स्तर उच्चपाया गया। 50ः छात्राओं में जानकारी का स्तर बिलकुल निम्न पाया गया। जबकि 60ः छात्रों में वृक्षों एवं वातावरण संबंधी जानकारी का स्तर उच्च पाया गया। 35ः छात्रों में जानकारी का स्तर सामान्य एवं 5ः छात्रों में जानकारी का स्तर बिल्कुल निम्न पाया गया। परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि पर्यावरण तथा विकास से संबंधित मुद्दे असंतुलन के परिणामस्वरुप उभर रहे है। छात्राओं में भी पर्यावारण संबंधी ज्ञान छात्राओं में भी छात्रों की तरह ही पाया जाता है, परन्तु छात्राएं की घरेलू प्रकृति का प्रभाव उनके ज्ञार्नाजन पर दिखाई देता है।

सुझाव

विकास के साथ पर्यावरण अध्ययन भी जरुरी है।

1. पर्यावरण के प्रति सजग उत्तरदायित्व निभाने की अत्यंत आवश्यकता है।
2. पर्यावरण से संबंधित प्रतियोगिता जैसे प्रश्नमंच, भाषण, निबंध लेखन, चित्रकला में भाग लेना चाहिए।
3. छात्र/छात्राओं को शिक्षण भ्रमण पर ले जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति जागरुक हो सके।

संदर्भ

1. *भारत में आर्थिक पर्यावरण :– ओ.पी. शर्मा*
2. *सामान्य शोध एवं सर्वेक्षण – रविन्द्रनाथ मुकर्जी*
3. *शर्मा डॉ. टी.सी. : पर्यावरण शिक्षा, रजत प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008*